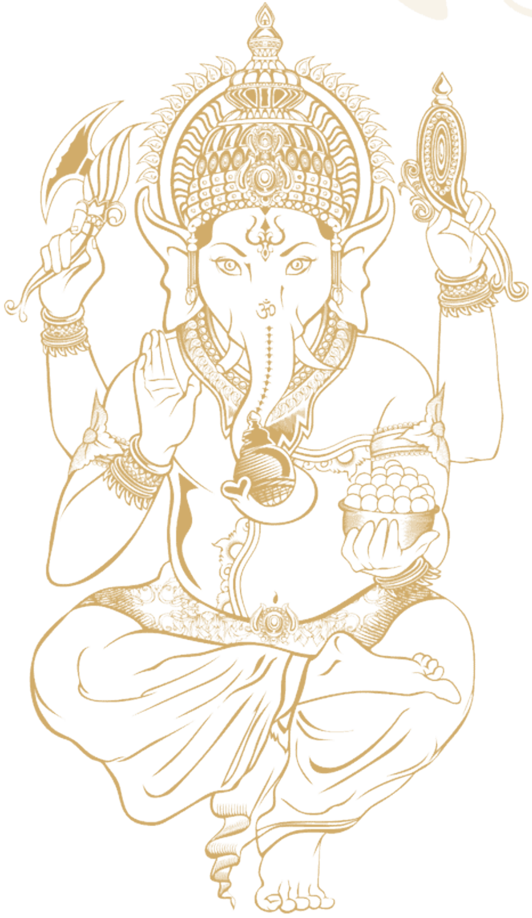

Mr.Rajnish Mathur

03 Jun 1982

04:30 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119308101

तिथि 03/06/1982 **समय** 16:30:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:36:24
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	08:55:11 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:02:00 घं	योनि	महिष
सूर्योदय	05:23:29 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	19:15:08 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2039	वश्य	मानव
शक संवत	1904	वर्ग	मृग
मास	ज्येष्ठ	युँजा	मध्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	वायु
तिथि	13	जन्म नामाक्षर	रो-रोहित
नक्षत्र	स्वाति	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
योग	परिघ	होरा	बुध
करण	कौलव	चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी
राहु 8वर्ष 9मा 29दि
शनि
02/04/2007
02/04/2026

शनि	05/04/2010
बुध	13/12/2012
केतु	22/01/2014
शुक्र	24/03/2017
सूर्य	06/03/2018
चन्द्र	05/10/2019
मंगल	13/11/2020
राहु	20/09/2023
गुरु	02/04/2026

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 11मा 23दि
भ्रामरी
27/05/2022
27/05/2026

भ्रामरी	06/11/2022
भद्रिका	28/05/2023
उल्का	26/01/2024
सिद्धा	05/11/2024
संकटा	26/09/2025
मंगला	05/11/2025
पिंगला	26/01/2026
धान्या	27/05/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:35:08	तुला	स्वाति	3	राहु	केतु	---	0:00			
सूर्य			18:56:13	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.45	अमात्य	पितृ	मित्र
चंद्र			13:27:34	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	सम राशि	1.08	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			09:44:13	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	0.90	ज्ञाति	भ्रातृ	वध
बुध	व	अ	16:27:20	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि	1.06	भ्रातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु	व		07:42:22	तुला	स्वाति	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.50	कलत्र	धन	जन्म
शुक्र			10:32:42	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	सम राशि	1.32	पुत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व		22:04:36	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.13	आत्मा	आयु	मित्र
राहु	व		20:05:05	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	उच्च राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		20:05:05	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	राहु	उच्च राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

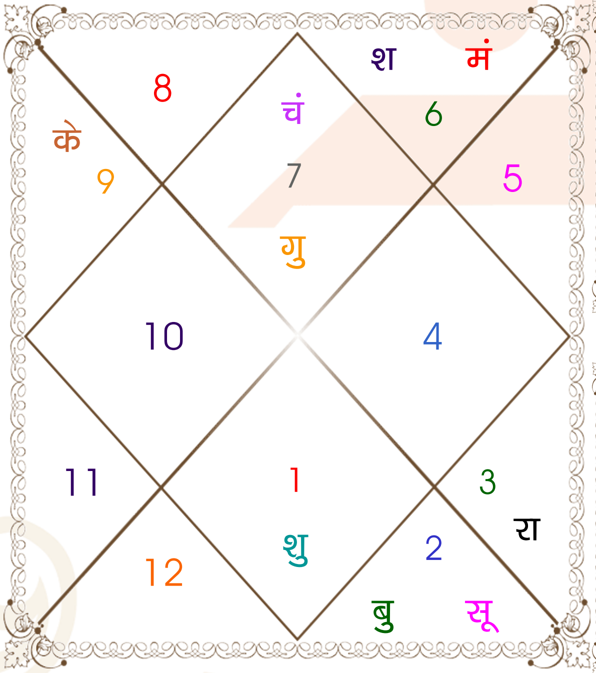

चन्द्र कुंडली

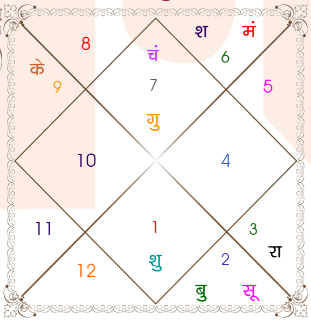

नवमांश कुंडली

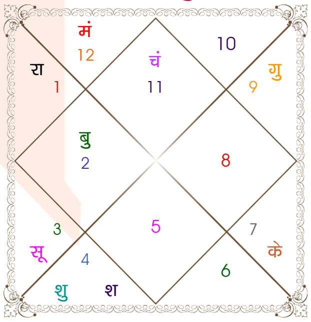

सर्वाष्टकवर्ग

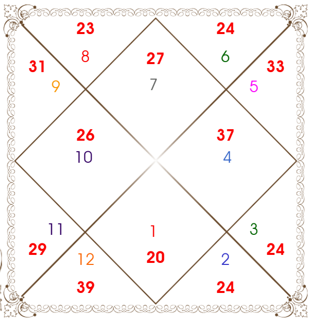

दशमांश कुंडली

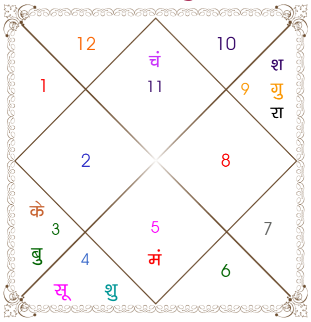

Narayan Jyotish Sanathan
+919868145834
mishrashivkant@gmail.com

नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका गण देव, नाड़ी अन्त्य, योनि महिष, वर्ग मृग तथा वर्ण शूद्र होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "रो" होगा। यथा- रोहित ।

आपकी प्रवृति स्वभाव से ही सहनशील रहेगी तथा सुख एवं दुख को समान रूप से सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। व्यापार में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा अपनी आजीविका में प्रधानकार्य के रूप में व्यापार का आप चुनाव कर सकेंगे। आप के हृदय में दया एवं करूणा की भावना सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा दीनदुखियों के प्रति अपनी इस भावना का आप जीवन काल में प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी वाणी हमेशा मधुर एवं प्रिय होगी जिससे लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपकी प्रवृति धामिकता की भावना से युक्त रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप धर्माचरण में सर्वदा तत्पर रहेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

आप हमेशा देवता एवं ब्राहमणों के भक्त रहेंगे तथा उनके प्रिय कार्य अर्थात् धामिक कार्य कलापों को करने वाले होंगे। साथ ही समय समय पर इनकी भी पूजार्चन सम्पन्न करते रहेंगे। अपने जीवन में आप नाना प्रकार के सुख ऐष्वर्य तथा वैभवादि का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे तथा इनके अभाव की आपको कभी भी अल्पता प्रतीत नहीं होगी। साथ ही धन से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। परन्तु आपकी बुद्वि तेज नहीं होगी तथा मध्यम बुद्धि से ही आपके कार्य सफल होंगे।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपका शारीरिक स्वरूप देखने में अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही मुखमंडल में भी तेजस्विता विद्यमान रहेगी। आपकी मुख मुद्रा समान्यतया प्रसन्नता को प्राप्त रहेगी एवं दुःख प्रदर्शन का इसमें अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राज्य अथवा सरकार से धन की प्राप्ति भी करेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक उसका उपभोग करेंगे।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप विविध प्रकार के शास्त्रों के ज्ञाता होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका तत्व ज्ञान प्राप्त करेंगे। अतः समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी परन्तु समाज में अन्य स्त्रियों से आप अनुरक्त रहेंगे तथा उनके प्रिय भी रहेंगे। आप स्वभाव से विनम्र तथा सुशील होंगे तथा देवताओं की भी आप पूजार्चना करने वाले होंगे परन्तु प्रकृति से हमेशा कंजूस रहेंगे।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यो में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर होंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होगी तथा नाक कुछ ऊंची होगी। जीवन में आप नाना प्रकार के वाहनों से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में अन्य जओं से आपके

मैत्रीपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे साथ ही भूमि एवं वाहनादि से आप शक्तिशाली रहेंगे त पराक्रमी पुरुष भी होंगे। आपके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे तथा मन से आपको सम्मान प्रदान करेंगे। धनवैभव एवं ऐश्वर्य से आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगे। आप अपनी स्त्री के पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सांसारिक कार्य उसी के निर्देश एवं आज्ञा से सम्पन्न करेंगे। विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करने की आप में पूर्ण क्षमता रहेगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके अतिरिक्त धनधान्य आदि को संग्रह करने की भी आपकी प्रवृति होगी। आप समय समय पर बन्धु वर्ग के हित कार्य भी करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवताओं तथा सज्जन पुरुषों की सेवादि कार्य करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे तथा आपका जीवन विद्धता पूर्ण एवं पवित्र रहेगा। आपके शरीर में सुगन्धि की वास रहेगी परन्तु शरीर के अन्य अंग शिथिल एवं दुर्बलता को प्राप्त रहेंगे। घूमने तथा यात्रा करने में आप विशेष रूचिशील रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय भ्रमणादि में ही व्यतीत होगा। व्यापारिक कार्यों में आप अत्यन्त चतुराई का प्रदर्शन करेंगे तथा समाज में देववाची शब्द के द्वितीय नाम से ख्याति अजित करेंगे। आप अपने संबंधियों तथा बन्धुओं का यत्नपूर्वक उपकार करेंगे परन्तु इन्ही लोगों से बाद में आपको अपमानित भी होना पडेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्धि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा शरीर भी देखने में दुर्बल होगा। आपकी संतति संख्या अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपका भक्ति भाव रहेगा। आप में धैर्य का गुण रहेगा। अतः आपके समस्त कार्य शीघ्रता एवं चंचलता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे। न्याय के प्रति आप निष्पक्ष होंगे तथा इसमें पूर्ण श्रद्धा रखेंगे। आपकी निष्पक्षता को देखते हुए अन्य लोग अपने वाद विवादों में आपको मध्यस्थ या पंच बनाकर आपका फैसला स्वीकार करेंगे। साथ ही आपका भाग्योदय भी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो ड्रुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम होगा तथा राज्य के उच्चाधिकारियों से आपके मधुर

संबंध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर की प्राप्ति करेंगे। आप यदा कदा अधिक बोलने लगेंगे जिससे अन्य लोगों में आपके प्रभाव में न्यूनता आएंगी। ज्योतिष अथवा नक्षत्रादि शास्त्र के ज्ञान में आप निपुणता प्राप्त करेंगे तथा बन्धु वर्ग तथा सेवकों के प्रति आपका स्नेह प्रशंसनीय होगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

यदा कदा आप कुअवसर पर क्रोध करेंगे अतः मन में सन्ताप उत्पन्न होगा। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे। अतः सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आप के मन में दया का भाव भी रहेगा तथा दीन दुःखियों की आप समय समय पर सहायता करते रहेंगे। आपकी आखों में चंचलता का भी आधिक्य रहेगा परन्तु धनागम अनिश्चित रहेगा कभी अधिक मात्रा में होगा तो कभी अल्प मात्रा में। अतः आथिक स्थिति आपकी विषम रहेगी। आप घर के अन्दर बलवान तथा घर के बाहर अपने को निर्बल महसूस करेंगे। मित्र तथा बन्धुवर्ग के आप सर्वदा प्रिय रहेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में नाना प्रकार के वाहनों से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति भी आपमें विद्यमान रहेगी। स्त्री के आप अत्यन्त प्रिय होंगे। साथ ही धनैश्वर्य एवं वैभव से भी आप सुशोभित रहेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देव गण में जन्म होने के कारण आपकी वाणी प्रिय लगने वाली तथा मधुर होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल तथा सादगी पूर्ण होगी। आप अपने विचारों को सरलता से प्रकट करेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सुगमता से ग्रहण करेंगे। आप थोड़ी मात्रा में भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के विषय में आपका ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वणित गुणो से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। इसके साथ ही नाना प्रकार के धनैश्वर्य से भी युक्त रहेंगे।

आपका स्वरूप देखने में सुन्दर होगा। तथा दानशीलता की सद्भावना से भी

आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान मनुष्य होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के उत्सुक रहेंगे। अनावश्यक भौतिकता आपको पसन्द नहीं होगी। साथ ही आप समान में एक विद्वान के रूप में भी प्रतिष्ठित रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप लड़ाई झगड़ों तथा विवादों में अधिकांश रूप से विजय प्राप्त करने वाले होंगे। आप स्वयं भी साहसी होंगे तथा वीरता पूर्वक कार्य करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके घर में संततियां अधिक मात्रा में होंगी। आप में वायु प्रकृति की प्रबलता रहेंगी तथा धामिक कार्यों में भी आप उत्सुक रहेंगी परन्तु बुद्धि मध्यम ही रहेगी तीक्ष्णता का उसमें सर्वथा अभाव रहेगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त

शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दाता रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इस समय तथा दिनो में शारीरिक सुरक्षा के प्रति सचेत रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि अथवा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए साथ ही सोना, हीरा, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, दूध इत्यादि पदार्थों को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।